मोरंगे

जुलाई–अगस्त, 2025

अनुक्रम

गीत कविताएँ

नया साल

मेरा पेड़

हाय गर्मी

बारिश का संकेत

इतना तू क्यों बरसे रे?

कहानियाँ

चालाक आदमी

घमंडी पेड़

झगड़ालू बकरी

घमंडी लड़की

याद की धूप छाँव में

नियत बुरी मत करो

साईकिल की रेस

मेरे जीवन में DMT के अनुभव

बात लै चीत लै

एक किस्सा दामाद का

सम्पादन : राजेश कुमावत
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : विजेन्द्र गुर्जर, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल
वर्ष 16 अंक 181–182

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

yatra foundation AUSTRALIA
'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

गीत कविताएँ

नया साल

नया नया साल है
मालपुए का माल है
ढोल भी कमाल है
खायेंगे और बजायेंगे
नये कपड़े लायेंगे
खूब धूम मचायेंगे।

निधि कुमावत, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

तू भी भली

आरी भली तू जारी भली
तू माँ के घर जारी भली
भट्टा–गोभी लेती चली
लेती चली तू लेती चली
बस में बैठकर मामा के चली
मामा के चली तू नाना के चली
आरी भली तू जारी भली
थैला फटा तो गोभी भली
गोभी कड़ी तो भट्टा कड़े
आरी भरी तू जारी भली
तू भी भली और मामा भी भले

विशाल बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मेरा पेड़

हरा–भरा पेड़ बिचारा
लगता है सबको प्यारा
जब भी फूल–फल लागे
कोई भी आ जाये
और तोड़–तोड़ ले जाये
कहने पर गुस्साए
क्या तुम्हारा है अधिकार
मुझसे ही है ये श्रृंगार
बीज उगाकर बड़ा किया
पानी देकर पाला
बाड़ लगाकर खड़ा किया
झूमी जब है डाली
मेरा पेड़ है मैं ही माली
तुमने की है क्या रखवाली?

राजेश कुमावत, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

आलिया, कक्षा–9, उमंग सेंटर शेरपुर

हाय गर्मी

गर्मी के दिन आते हैं
हमको बहुत सताते हैं
कहाँ खेलने जाए हम
तेज धूम में निकले दम
खेल का मैदान गरम
लू को आती नहीं शर्म
कहीं चेन न पाते हम
मन ही मन झूझलाते हम

इशु कुमावत, कक्षा–7,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

बारिश का संकेत

चुप चुप देखा करो ना शोर
नाच रहा जंगल में मोर
काला बादल जब घिर जाए
बारिश का संकेत दिखाएं
गांव वाले खुशियाँ मनाएं।

अजय बैरवा, कक्षा–7, समूह–हरियाली

गोलू गुर्जर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल

इतना तू क्यूं बरसे रे

पानी पानी हो गया जीवन
इतना तू क्यूं बरसे रे।
काम पड़े जब आवे नहीं,
जल बिन जीवन तरसे रे।
कहीं घर में पानी घुस गया
कई तालाब फूटे रे।
हर मनवा ये अरज करे
अब तो पीछो छूटे रे।
सारी फसलें चौपट हो गई
उजड़ गए कई गांव रे।
बस चलती थी सड़कों पर
चलती है अब नाव रे।
रोटी बिन तरसे हैं कई
समझ न आए हाल रे।
घर की छत भी गिर गई
नहीं बची कोई डाल रे।
पानी पानी हो गया जीवन
इतना तू क्यूं बरसे रे।।

राजेन्द्र/विनोद गुर्जर, समूह–आकाशगंगा, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

पूनम गुर्जर, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

आशिष गुर्जर, कक्षा–4, फैलोशिप सेंटर बोदल

कहानियाँ

चालाक आदमी

एक बहुत ही चालाक आदमी था। एक दिन यह आदमी बाजार गया। वहाँ दो रूपये किलो आम मिल रहे थे। चाला आदमी एक रूपये किलो लेना चा रहा था। चाला आदमी ने दुकानदार के पास जाकर कहा कि मुझे एक रूपये किलो आम दे दो। दुकानदार बोला जाओ–जाओ, आगे जाओ। चालाक आदमी आगे चलता रहा तभी उसे एक आम का पेड़ दिखाई दिया। चालाक आदमी ने उस पेड़ के सारे आम तोड़कर टोकरी में भर लिए और बाजार में पांच रूपये किलो आम बेचने लगा।

गौरव बैरवा, कक्षा–6, उदय किरण फैलोशिप शिक्षण केन्द्र हिम्मतपुरा।

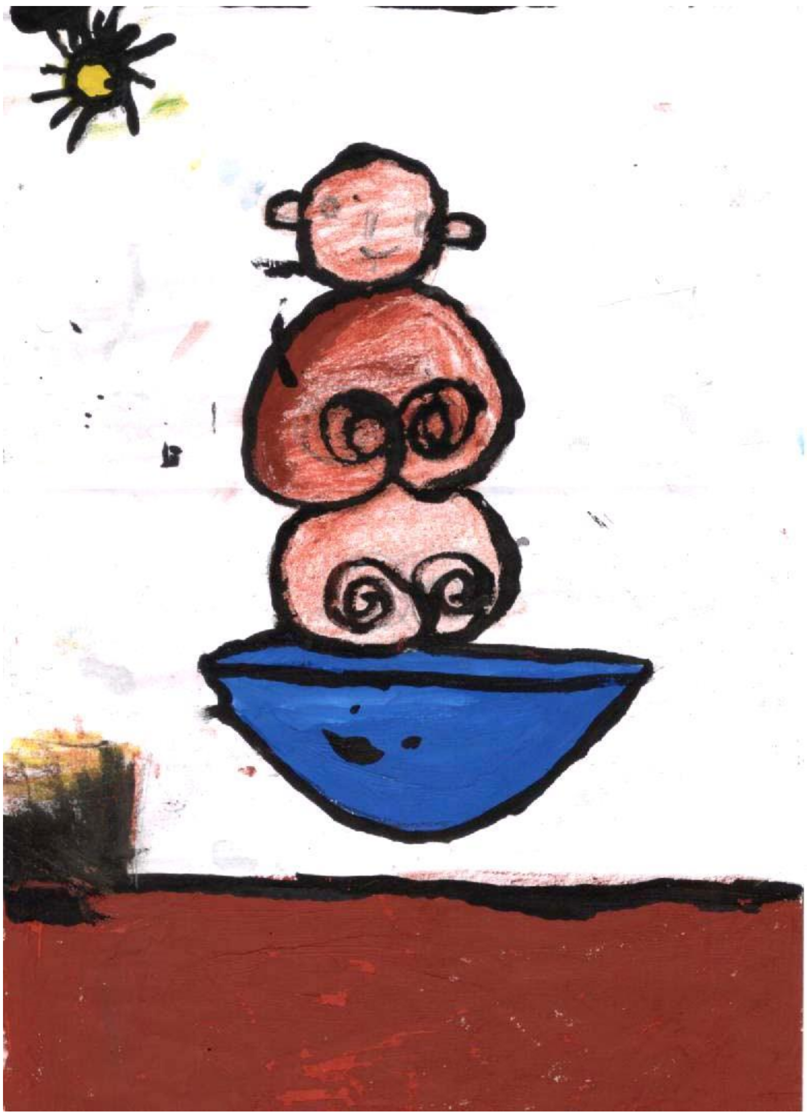

रिंकू गुर्जर, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

घमंडी पेड़

एक घने जंगल में एक आम और जामुन का पेड़ था। आम का पेड़ बहुत ही दयालु था। जामुन का पेड़ बहुत ही घमंडी था। जामुन का पेड़ किसी भी पक्षी की मदद नहीं करता था। आम का पेड़ सबकी मदद करता था। एक दिन बहुत जोरों से आंधी तूफान आया। जामुन का पेड़ नदी के पास उगा हुआ था जिस कारण जामुन का पेड़ टूट कर गिर गया तभी आम का पेड़ बोला कि तुमने किसी की भी मदद नहीं की है इसलिए तुम्हारे साथ इतना गलत हो रहा है। यदि तुम भी किसी की मदद करते तो आज तुम्हारे लिए भी कोई अच्छा सोचता।

आरती, फैलो, उदय किरण फैलोशिप शिक्षण केन्द्र हिम्मतपुरा।

झगड़ालू बकरी

एक गांव में बिजली नाम की एक बकरी थी जिसको अकेले रहना ही पसंद था। वह बहुत ही झगड़ालू प्रवृत्ति की थी। वह रोज जंगल में झुण्ड के साथ जाती जरूर थी, किन्तु जंगल में वह सबसे अलग–अलग ही रहती थी। वह हमेशा किसी न किसी बकरी को परेशान करती ही थी। तब जाकर उसे चरने में मजा आता था। सारी बकरियाँ उससे दुःखी भी थी। कई बार उस बकरी को अकेलापन महसूस होता था कि मेरी तो कोई भी दोस्त भी नहीं है। तभी उस बकरी ने एक बकरी को दोस्त बनाया। वह बहुत खुश थी कि अब उसकी एक दोस्त भी है। उसकी दोस्त ने उसे झुण्ड में साथ रहकर चलने की खूब सलाह दी थी किन्तु वह नहीं मानती थी। एक दिन वह गाँव की अन्य बकरियों के साथ जंगल में चरने गई। उसदिन उसकी दोस्त ने उसे झुण्ड से दूर जाने से मना किया परन्तु वह नहीं मानी। कुछ देर बाद जब वह अकेली चर रही थी तब अचानक एक भेड़िये ने उस पर हमला कर दिया। तभी उसकी दोस्त ने आकर उस भेड़िये से उसे बचा तो लिया किन्तु वह खुद को नहीं बचा पाई। बकरी को बहुत दुःख हुआ क्योंकि अब उसकी दोस्त इस दुनिया में नहीं रही। अब वह समझ गई थी कि मेरी दोस्त झुण्ड में रहकर साथ चलने के लिए क्यों बोलती थी?

ईसीता प्रजापत, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा।

घमंडी लड़की

पायल सैनी, कक्षा–9, उमंग सेंटर रांवल

एक गाँव में एक लड़की थी। वह अपने आप पर बहुत ही घमंड करती थी। क्योंकि वह बहुत ही सुंदर और अमीर थी। इस वजह से उसकी किसी के साथ नहीं बनती थी। एक दिन वह तालाब में नहाने गई थी। नहाते–नहाते वह गहरे पानी में चली गई और डूबने लगी और बचाओ–बचाओ चिल्लाने लगी। पास में खेत पर एक ईमानदार लड़की काम कर रही थी। उसने उस घमंडी लड़की की बचाओ–बचाओ की आवाज सुनी। वह तुरंत अपना काम छोड़कर ईमानदार लड़की दोड़कर घमंडी लड़की को बचाने आई। वह तुरंत पानी में कूद गई और घमंडी लड़की को बचा लिया। थोड़ी देर सुस्ताने के बाद घमंडी लड़की ने कहा कि मुझे माफ कर दो आज के बाद में किसी को परेशान नहीं करूंगी और न ही घमंड। आज से मैं सभी के साथ मिलजुल कर रहूंगी और अच्छा व्यवहार करूंगी।

नाराजी बैरवा, उम्र–9 वर्ष, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा।

चांदनी बैरवा, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर छान

याद की धूप छाँव में

नियत बुरी मत करो

पवन गुर्जर, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर कुशालीपुरा

एक बार की बात है। एक दिन मैं स्कूल की छुट्टी के बाद साइकिल से अपने घर जा रहा था। मैं बड़े आराम से जा रहा था। अचानक मुझे रास्ते में 20 रूपये दिखाई दिए। पहले तो मैंने चारों ओर देखा क्योंकि मुझे डर था कि कोई देख तो नहीं रहा, पर वहाँ कोई नहीं था। मैं धीरेसे उतरा और 20 रूपये जल्दी से भाग कर उठा लिये। मैं बहुत खुश हुआ। सोचने लगा कि आज तो मैं चॉकलेट खाऊंगा। अचानक मेरी नजर एक लड़के पर पड़ी। वह शायद कुछ ढूंढ रहा था। मैंनें उससे पूंछ ही लिया कि तू क्या ढूंढ रहा है। वह वह लड़का बोला कि मेरे 20 रूपये खो गये हैं, उनको ढूंढ रहा हूँ। मैंने सोचा कि इस को यह पैसे दूंगा तो यह सोचेगा कि इसने मेरे पैसे चुराए हैं। मैं इसे यह पैसे नहीं दूगा तो अच्छा होगा। मैंने उस लड़के से कहा कि तू यहाँ पर खोज ले मिल जायेंगे और मैं यह कहकर जल्दी से बड़ा खुश होता हुआ वहाँ से निकल आया। मैंने घर आकर अपनी जेब में हाथ दिया, सोचा टॉफी लेकर आऊंगा। जैसे ही जेब में हाथ डाला तो मेरे होश उड़ गए। मेरी जेब में पूरा हाथ नीचे तक चला गया। मेरी जेब फटी हुई थी। टॉफी खाने का सपना, सपना ही रह गया। पैसे तो वहीं पर ही गिर गए थे। मैंने सोचा मेहनत की कमाई ही फलदायक होती है। बाद में एक दिन मैंने उस लड़के से पूछा कि भाई तुझे पैसे मिल गए थे क्या? उसने कहा तेरे जाने के बाद ही मिल गए थे। मेरे मन को थोड़ी तसल्ली हुई कि जिसके थे उसके पास तो गए।

पियुष गुर्जर, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

साईकिल की रेस

एक बार मैं गाँव में साईकिल चला रहा था। मेरी साईकिल में ब्रेक तो थे पर कभी–कभी ब्रेक खुल जाया करते थे। एक बार मैं और मेरा दोस्त साईकिल से रेस लगा रहे थे। रेस शुरू होने ही वाली थी। हमको बस का हॉर्न सुनाई दिया। लेकिन मेरे दोस्त ने कहा कि अभी तो चार बजे हैं। बस तो पांच बजे आएगी। फिर हमने रेस शुरू की। हम एक दूसरे के पीछे थे। मैं दूसरे नम्बर पर था। मैंने सबसे आगे निकलने की कोशिश की और मैं आगे निकल आया। मैं बहुत खुश था। पर इस खुशी के चक्कर में मैं यह भूल गया कि मेरी साईकिल के ब्रेक कभी–कभी खुल जाते हैं। अचानक मुझे बस दिखाई दी। मेरे हाथ पैर सुन्न पड़ गए। दिमाग में सिर्फ यही आ रहा था कि साईकिल कैसे रोकूँ। मैं कहाँ रेस के चक्कर में पड़ गया। मैं बहुत डर गया और घबरा भी गया। मैंने सोचा कि आज तो टक्कर लग जायेगी। मैंने बस वाले की तरफ इशारा किया तो वह समझ गया और उसने बस को पीछे ली और साइड में रास्ता दिया। मैंने साईकिल निकाली। इस तरह साईकिल बस से टकराने से बच गई और मैं रेस तो जीत ही गया पर उसके बाद से मैं साईकिल को हमेशा दुरूस्त रखने लगा। मैंने बस वाले को धन्यवाद दिया।

दीपेश गौड़, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

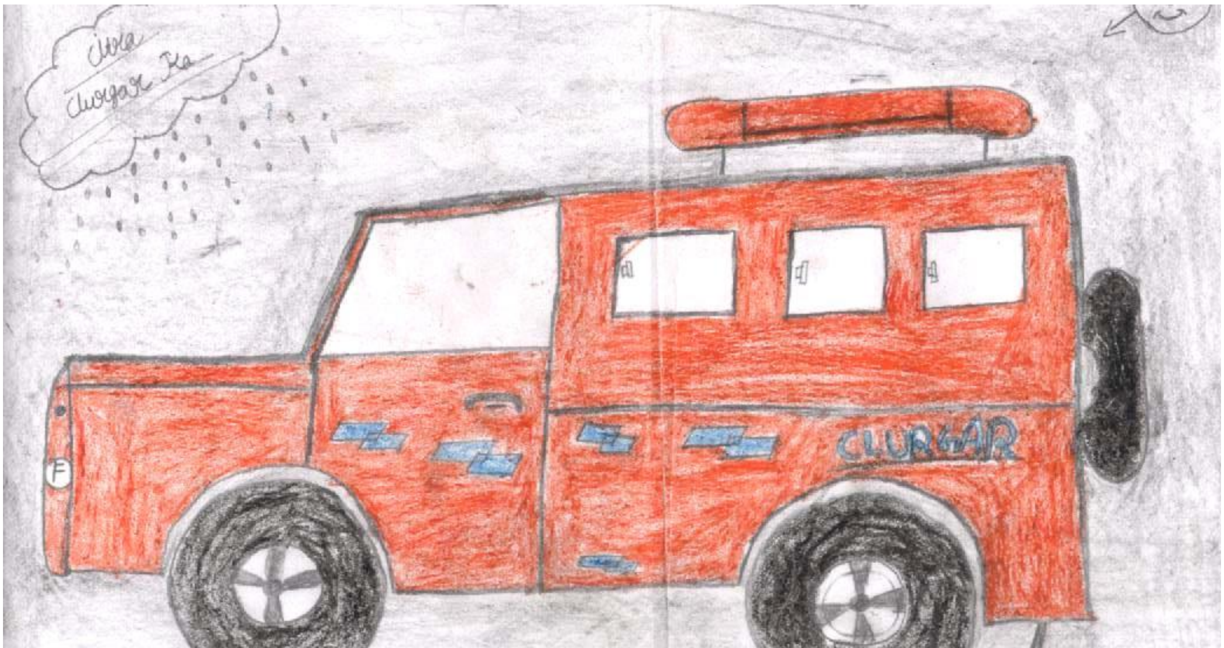

आभा तंवर, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर छाण

मेरे जीवन में DMT के अनुभव

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार में बच्चों के साथ DMT (डांस मूवमेंट थैरेपी) सैशन चलता है। इन सत्रों में मैं भी शामिल होती रही हूँ। वैसे तो मेरे साथ पांचवी कक्षा से ही DMT का काम हो रहा है। पांचवी, छठी में तो मैं इसे मजाक में लेती थी। मैं सोचती थी कि यह तो बस एक खेल है पर जब मैं सातवीं और आठवीं में पढ़ने लगी तो वास्तविक में मुझे यह महसूस होने लगा कि DMT मेरे लिए बहुत अच्छी है। मेरे जीवन में DMT ने बहुत बदलाव किया है। जैसे पहले मुझे ज्यादा शर्म आती थी। अब मुझे शर्म नहीं आती है। अब मैं लोगों से सीधा आंखे मिलाकर बात करने लग गई हूँ। मुझे हिन्दी लिखना शुद्ध नहीं आता था। लेकिन डीएमटी से प्रेरित होने के बाद से बहुत सारी कवितायें मेरी मोरंगे में छपी हैं। मेरे बड़े ताऊजी की लड़कियाँ मेरे से बहुत बड़ी हैं लेकिन वे लोगों से आंखे मिलाकर बात नहीं कर पाती हैं और सामने से बोल भी नहीं पाती हैं लेकिन उनके मुकाबले मेरे में बहुत बदलाव है। मैं किसी से भी आंखे मिलाकर बात कर लेती हूँ। मुझसे मेरे ताऊजी की लड़कियों ने पूछा कि तू ये सब कैसे कर लेती है तो मैंने उनको बताया कि ये सब DMT का कमाल है।

मैंने DMT के लिए एक कविता बनाई है –

DMT आई DMT आई
हम सबको उठाती आई
नींद में थे कुछ बच्चे
उन्हें अब जगाती आई
DMT आई DMT आई।

रवीना शर्मा, समूह–हरियाली, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

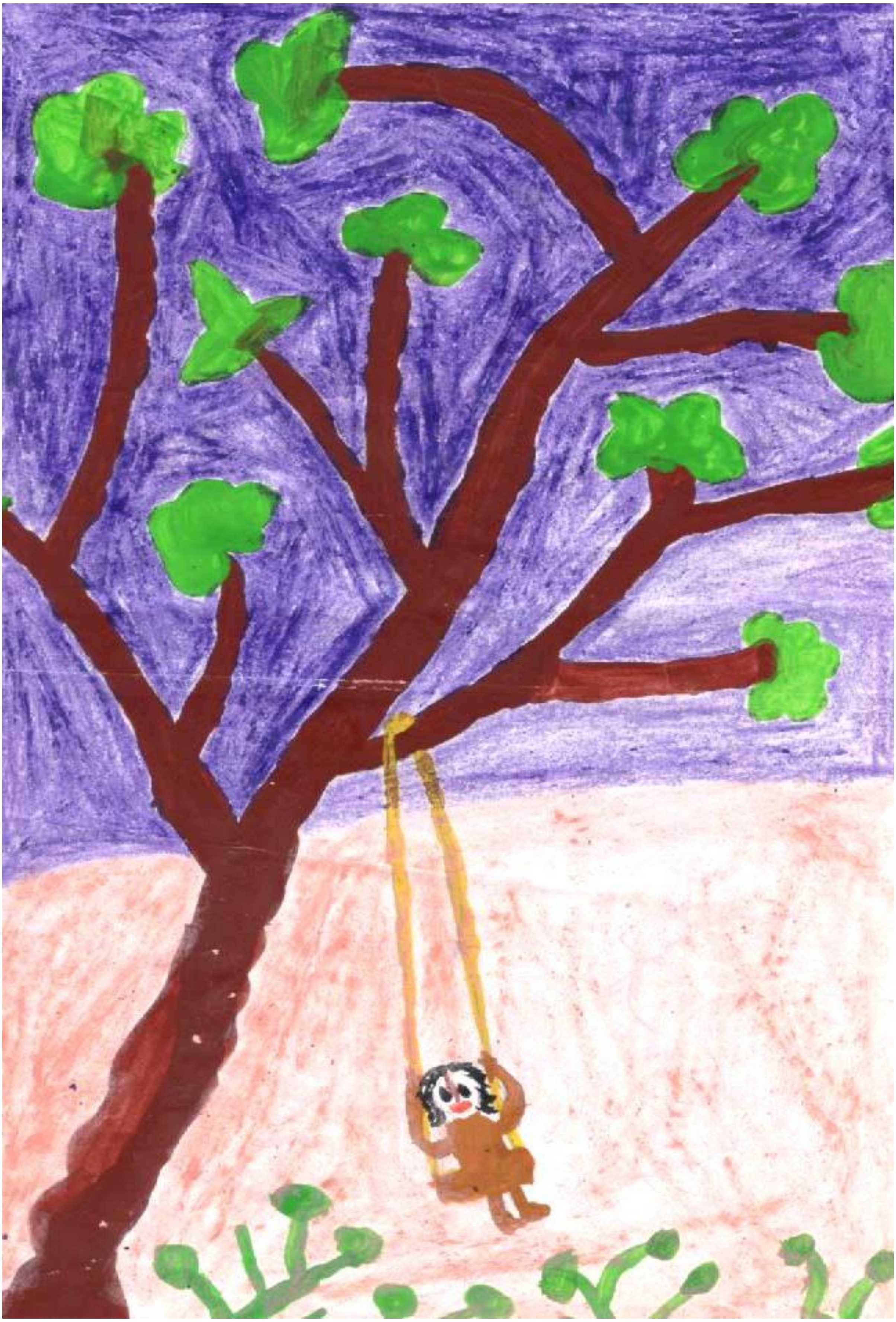

गोलू गुर्जर, फैलो, फैलोशिप सेंटर बोदल

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. अड़ पंखड़ी बड़ पंखड़ी, राजा बैठयो नई हवेली।
2. दे हाले दे की लामंड हाले, ठुकरानी को ठाकर हाले, चोटी का फटकारा लागे।
3. अड़ काटू बड़ काटू, बड़ का बादू भआरा, आई नदी चौपड़ खेलूं, देख तमाशा मारा।

बिन्तोषी गुर्जर, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

4. एक गुजरी दो पहने लहंगा, छः छटकावे नाड़ा, चोटीके ऊपर फूंदो।
5. धम–धम कुंडी, नौ पग उंडी, चाल बेल पच्चीस नारा, ई नगरी में दो बंजारा।

आरूषी गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

अंजली सैनी, कक्षा–9, उमंग सेंटर शेरपुर

चुटकले

टीचर – 1 से 100 तक गिनती सुनाओ।

टिंकू – 1,2,3,4,5,7,8,9,10, ...

टीचर – 6 कहाँ है?

टिंकू – जी वो तो मर गया।

टीचर – मर गया? कैसे मर गया?

टिंकू – जी मेडम, आज सुबह टीवी पर न्यूज में बता रहे थे कि स्वाइन फ्लू से 6 की मौत हो गई।

पप्पू जलेबी बेच रहा था, लेकिन आवाज लगा रहा था 'आलू ले लो ... आलू ले लो ...।'

राहगीर – लेकिन ये तो जलेबी है।

पप्पू – चुप हो जा! वरना मक्खियाँ आ जायेंगे।

इन्टरनेट से साभार

धोली गुर्जर, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

बात लै चीत लै

एक किस्सा दामाद का

जब हम अपने आस–पास के लोगों से, समुदाय से, बड़े–बुजुर्गों के साथ कोई चर्चा करते हैं तो अक्सर कई तरह की ऐसी घटनाए सामने आ ही जाती हैं जिन्हें सुनकर हमें तो बहुत हंसी आती है पर उनके लिए वह पल बड़ा खतरनाक था। आज के समय में हम उन्हें चुटकुल भी समझ सकते हैं। ऐसी ही एक चर्चा के बारे में बताता हूँ जिसे सुनकर आप हंसे बगैर नहीं रह पायेंगे। कुछ आदमी बैठे हुए थे। कई तरह की वर्तालाप चल रही थी। मैं भी उनमें शामिल हो गया। मैंने उनसे कहा कि अपने पुराने गांव के बारे में बताओ। क्योंकि पुरानी बातें सुनकर मुझे भी काफी इंट्रेस्ट आता है। मैं अक्सर उनसे पूछता ही रहता हूँ कि आपको यहां आकर कैसा महसूस हो रहा हैं? तो फिर वे अपने पुराने गांव की बातें छेड़ देते थे। ऐसी ही एक चर्चा के बारे में आपको सुनाता हूँ।

एक व्यक्ति ने एक किस्सा सुनाया कि एक बार वह अपने ससुराल गया। ससुराल भी भयंकर जंगल के बीच था। चारों तरफ घना जंगल और बीच में गांव था। अंधेरा होते ही सब जंगली जानवर के डर से अपने घरों में दुबक जाते थे। वहां भी ऐसा ही हुआ। सबने उसे सचेत कर दिया कि यहां अंधेरा होते ही आसपास जानवर आ जाते हैं। अब वो तो मेहमान था किसी ने मजाक मजाक में और ज्यादा डरा दिया। बेचारा बहुत डर गया। उसकी एक आदत थी कि वह शाम को अंधेरा होने पर ही शौच के लिए जाता था। जैसे ही हल्का सा अंधेरा हुआ उसने सोचा कि बाहर तो जाना ही पड़ेगा, क्योंकि ये ऐसे कार्य हैं जिन्हें रोकना नामुमकिन है। वह थोड़ी हिम्मत बांध कर बाहर गया। उस समय गांवों में कोई शौचालय नहीं था। वह डरता हुआ एक पेड़ के पीछे गया, तभी उसे किसी आ आवाज सुनाई दी। उसने इधर देखा, उधर देखा। पास में ही उसे पेड़ों के बीच बाघ जैसा कोई जानवर दिखाई दिया। डर तो पहले से उसके दिलों दिमाग में छाया हुआ था। ऊपर से ये और दिख गया। फिर क्या था पेंट पकड़ कर जितना तेज वह भाग सकता था उतना तेज चिल्लाता हुआ भागने लगा। घर के बीच में आ गया और जोर–जोर से चिल्लाने लगा। शेर आ गया, शेर आ गया। पूरा गांव लाठी डंडे लेकर दौड़ते हुए आ गए। गांव की यही तो खासियत होती है। किसी के भी जरा सी समस्या आते ही पूरे गांव वाले समस्या

दूर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसा शहर में कहां देखने को मिलता है। गांव वालों ने उससे पूछा कि कहां पर आ गया शेर। उसने कहा पेड़ों के बीच में, वो रहा। पूरे गांव वाले बड़ी सावधानी से शेर को मारने के लिए चल पड़े। शेर को चारों तरफ से घेर लिया गया लेकिन तभी गांव वालों को देखकर वह जानवर खड़ा हो गया। लेकिन जैसे ही वह जानवर खड़ा हुआ सभी गांव वालों ने हथियार डाल दिए पर हथियार शेर को देखकर नहीं डाले। अरे वहां शेर तो था ही नहीं वो तो एक ऊंट था जो झाड़ियों में बैठा हुआ था। ये तो वो कहावत हो गई कि 'खोदा पहाड़, निकली चुहिया।' फिर क्या था सभी हंसने लगे और वह आदमी जिसने शेर देखा था वो तो अभी भी बेखबर था। अपना पेंट पकड़कर खड़ा था। गांव वाले उसके पास आए और कहा पेंट पहन लो दामाद जी। शेर नहीं था वह तो ऊंट था। यह सुनकर उसके दिल की धड़कन थोड़ी शांत हुई। पर उसके बाद तो सभी ने उसका भारी मजाक उड़ाया। ऐसे किससे अक्सर हो ही जाते हैं।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

लक्ष्मी गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, फैलोशिप सेंटर भैरूपुरा

पहेलियों के जवाब

1. मक्खी
2. घी
3. बादल
4. परछाई
5. चांद और सूरज

राहुल गुर्जर, कक्षा–4, फैलोशिप सेंटर बोदल